Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

विकसित भारत के निर्माण में रामराज्य के संप्रत्यय की उपादेयता

Dr. Shriprakash[1], Dr.Badri Narayan Mishra[2]
[1]Assistant Professor, Department of Hindi CSJM University Kanpur
[2]Assistant Professor, Department of Education CSJM University Kanpur
Email: Shriprakash747@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171111
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 69-75
November. 2025
Submitted: 16 Oct. 2025
Revised: 26 Oct. 2025
Accepted: 10 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

सारांश

विकसित भारत के निर्माण में रामराज्य का संप्रत्यय अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रेरणास्पद और आदर्शवादी मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में उभरता है। भारतीय चिंतन परंपरा में रामराज्य केवल एक धार्मिक या पौराणिक अवधारणा नहीं है, बल्कि एक ऐसी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था का प्रतीक है, जिसमें न्याय, समता, करुणा, उत्तरदायित्व, लोककल्याण और धर्मनीति का संतुलित समावेश हो। आधुनिक भारत के संदर्भ में 'विकसित भारत' की परिकल्पना का लक्ष्य आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक उन्नति, सामाजिक सद्भाव, सुशासन, समावेशी विकास और मानव-केंद्रित नीतियों को साकार करना है। जब हम इस लक्ष्य को भारतीय दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों के संदर्भ में देखते हैं, तो पाते हैं कि रामराज्य के आदर्श आधुनिक शासन की हर मूलभूत आवश्यकता से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि विकसित भारत के निर्माण में रामराज्य की उपादेयता न केवल प्रासंगिक है बल्कि दिशानिर्देशक भी है।

मुख्यशब्द- *विकसित भारत, रामराज्य, संप्रत्यय की उपादेयता, प्रेरणास्पद, आदर्शवादी मार्गदर्शक सिद्धांत, पौराणिक अवधारणा, सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था, मानव-केंद्रित नीति, भारतीय दर्शन, सांस्कृतिक मूल्य*

प्रस्तावना

विकसित भारत के संदर्भ में रामराज्य का तात्पर्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों और रामायण महाकाव्य में उल्लिखित "रामराज्य" की अवधारणा से प्रेरित शासन के रूप में एक आदर्श राज्य से है। "रामराज्य" शब्द अक्सर भगवान राम के शासनकाल से जुड़ा हुआ है, जिसे धार्मिक और न्यायपूर्ण शासन का प्रतीक माना जाता है। रामराज्य में, शासक की कल्पना एक निस्वार्थ, बुद्धिमान और दयालु राजा के रूप में की गई है जो धर्म (धार्मिकता) को कायम रखता है और सभी नागरिकों के कल्याण के लिए काम करता है। रामराज्य की अवधारणा अक्सर समाज के सभी वर्गों के बीच ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानता और सद्भाव जैसे सिद्धांतों को आत्मसात किये हुए है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत में कई राजनीतिक नेताओं और आंदोलनों ने एक आदर्श समाज के अपने दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए रामराज्य के विचार का उल्लेख किया है। हालाँकि रामराज्य की व्याख्याएँ सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण के आधार पर भिन्न हो सकती है। भारत एक विविध और गतिशील राजनीतिक परिदृश्य के साथ एक लोकतांत्रिक गणराज्य भी है, जहां विभिन्न विचारधाराएं और दृष्टकोण सह-अस्तित्व में हैं. तथापि रामराज्य की स्थापना कुछ लोगों के लिए एक आकांक्षा बनी हुई है, लेकिन इसका व्यावहारिक कार्यान्वयन भारतीय जनता और उसके निर्वाचित प्रतिनिधियों के सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करता है।

रामराज्य

रामराज्य भारतीय संस्कृति, दर्शन और सामाजिक आदर्शों का वह सर्वोच्च मानदंड है जहाँ शासन-व्यवस्था का आधार केवल सत्ता या अधिकार नहीं, बल्कि न्याय, धर्म, करुणा, लोककल्याण और समानता होता है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Dr. Shriprakash, Assistant Professor, Department of Hindi CSJM University Kanpur

How to cite this article:
Shriprakash, & Mishra, B. N. (2025). विकसित भारत के निर्माण में रामराज्य के संप्रत्यय की उपादेयता. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 69–75. https://doi.org/10.5281/zenodo.17875106

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17875106
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

रामराज्य की परिकल्पना भारतीय मनीषा में आदर्श राज्य-व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित है, जहाँ शासक और प्रजा के बीच पारस्परिक विश्वास, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता का अटूट संबंध होता है।रामायण में वर्णित रामराज्य केवल राजनीतिक शासन का प्रतिरूप नहीं, बल्कि एक ऐसी समग्र जीवन-पद्धति है जिसमें आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी पक्षों का समुचित समन्वय दिखाई देता है। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है, और उनका राज्य इसी मर्यादा एवं धर्मनिष्ठ नेतृत्व का प्रतिफल है।

रामराज्य में शासन की मूलभूमि धर्म था—धर्म यहाँ किसी एक धार्मिक मत का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि वह व्यापक नैतिक-नियमों का समूह था जो समाज के हर व्यक्ति को न्याय, सत्य और करुणा की राह पर ले जाने की क्षमता रखता था। रामराज्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह थी कि प्रजा के जीवन में किसी भी प्रकार का दुःख, भय या असुरक्षा का भाव नहीं था। प्रत्येक नागरिक को आजीविका, शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान प्राप्त था। समाज में न तो सामाजिक शोषण था, न ही आर्थिक असमानता, और न ही किसी वर्ग या समुदाय के प्रति अन्याय की भावना। वर्ण-व्यवस्था में भी संतुलन बना हुआ था और प्रत्येक वर्ग अपनी भूमिका को धर्मानुसार निभाते हुए सामूहिक प्रगति में योगदान देते थे।

राजनीतिक दृष्टि से रामराज्य एक जनकेंद्रित शासन था, जहाँ राजा स्वयं को प्रजा का सेवक मानकर कार्य करता था। श्रीराम ने राज्य व्यवस्था में पारदर्शिता, न्यायप्रियता और लोकसंग्रह को सर्वोच्च महत्व दिया। प्रजा की शिकायतों को सुनना, उनके दुखों को दूर करना, और निर्णय लेते समय सामूहिक हित को प्राथमिकता देना रामराज्य की पहचान थी। किसी भी व्यक्ति की आवाज अनसुनी नहीं रहती थी। यही कारण है कि राम के शासनकाल में अपराध, भ्रष्टाचार, अत्याचार और अन्याय जैसी समस्याएँ लगभग नगण्य थीं।
आर्थिक क्षेत्र में रामराज्य समृद्धि का पर्याय था। कृषि, व्यापार, पशुपालन और वाणिज्य सभी क्षेत्रों में संतुलित विकास हुआ। किसी को भी अभाव नहीं था, और न ही किसी को अपनी आजीविका के लिए संघर्ष करना पड़ता था। सामाजिक सद्भाव भी रामराज्य की आधारशिला था—लोग एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहयोग का भाव रखते थे। समाज में दया, करुणा, त्याग, शील, सत्य और अहिंसा जैसे गुणों का प्रसार हुआ, जिससे नागरिकों का मानसिक और आध्यात्मिक विकास सहज रूप से होता था। यदि आध्यात्मिक दृष्टि से देखें, तो रामराज्य वह अवस्था है जहाँ मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन में भी संतुलन, कर्तव्य, नैतिकता और मानवता के मार्ग का अनुसरण करता है। यह केवल राजा का आदर्श नहीं, बल्कि समस्त समाज की सामूहिक चेतना का आदर्श है। आधुनिक समय में रामराज्य का अर्थ किसी प्राचीन राजतंत्र की पुनःस्थापना नहीं, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण है जिसमें न्याय, समानता, सुरक्षा, लोककल्याण, नैतिकता और मानव मूल्य सर्वोपरि हों। आज भी रामराज्य का आदर्श एक प्रेरणा की तरह कार्य करता है, जो हमें यह सीख देता है कि समाज तभी प्रगति कर सकता है जब शासन और जनता दोनों अपने-अपने कर्तव्यों को धर्मपूर्वक निभाएँ और समरसता, करुणा तथा न्याय की भावना को जीवन में अपनाएँ।

राम राज्य की अवधारणा

रामराज्य, जिसे अक्सर "राम का शासन' या 'धर्म का शासन' के रूप में वर्णित किया गया है तथा यह एक अवधारणा है जो भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं में गहराई से निहित है। यह मुख्य रूप से न्याय, सत्य, समानता और नैतिक मूल्यों के सिद्धांतों पर आधारित शासन की एक आदर्श शासन प्रणाली और न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था को स्थापित करता है। उत्तरकाण्ड में अयोध्या के राजा श्रीराम के शासन काल का वर्णन नैतिकता आधारित एवं न्यायपूर्ण शासन के रूप में किया गया है। रामराज्य की अवधारणा के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

नेतत्व और शासनः रामराज्य एक आदर्श शासक या राजा के गुणों पर जोर देता है। भगवान राम को एक दयालु बुद्धिमान और न्यायप्रिय नेता के रूप में दर्शाया गया है जो अपने लोगों के कल्याण को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखते हैं। उनका प्रशासन धर्म द्वारा निर्देशित है और कानून के शासन का पालन करता है।

समानता और न्यायः रामराज्य सभी नागरिकों के बीच उनकी जाति, पंथ या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना समानता को बढ़ावा देता है। न्याय निष्पक्षता से दिया जाता है और कानून का शासन कायम रहता है। रामराज्य में सभी का आदर और सम्मान किया जाता है।

नैतिकता और नैतिक मूल्यः भगवान राम के सत्य, ईमानदारी, करुणा, नैतिकता जैसे गुण रामराज्य के केंद्र में हैं। शासक और नागरिकों से इन गुणों के साथ जीवन जीने की अपेक्षा की जाती है।

समद्धि और कल्याणः रामराज्य एक ऐसे राज्य की कल्पना करता है जहां लोगों के बीच समृद्धि, विकास और खुशी हो। जहां नागरिकों के समग्र कल्याण और भलाई पर जोर दिया जाता हो।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

शांति और सद्भावः रामराज्य विभिन्न धार्मिक और सामाजिक समूहों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव, शांति और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है। यह एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देता है जहाँ लोग एक-दूसरे की मान्यताओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करते हुए सौहार्दपूर्ण ढंग से सह-अस्तित्व में रहते हैं।

पर्यावरण चेतनाः भगवान राम को अक्सर प्रकृति और वन्य जीवन की रक्षा से जोड़ा जाता है। रामराज्य में पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी का भाव है।

रामराज्य के संप्रत्यय की उपादेयता:

- **आदर्श शासन:** रामराज्य एक आदर्श शासन व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ राजा और प्रजा दोनों धर्म के अधीन हैं और राज्य का संचालन न्याय और सदाचार पर आधारित है।
- **सामाजिक न्याय:** यह एक ऐसे समाज की कल्पना करता है जहाँ सभी समान हैं और न्याय सुलभ है, भले ही वे गरीब हों।
- **सुख और संतुष्टि:** रामराज्य में सभी नागरिक सुखी, संतुष्ट, हृष्ट-पुष्ट और कर्तव्यपरायण हैं।
- **अहिंसा और आत्मनिर्भरता:** महात्मा गांधी ने रामराज्य को अहिंसा और आत्मनिर्भरता (स्वराज) के सिद्धांतों से जोड़ा, जो एक अहिंसक और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण पर जोर देता है।
- **नैतिक उत्कर्ष:** यह संप्रत्यय नैतिक उत्कर्ष और सद्भाव पर बल देता है, जो संघर्ष और अहंकार को कम करता है और सहयोग को बढ़ावा देता है।

रामराज्य का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक आधार

रामराज्य का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक आधार भारतीय चिंतन, वेद–उपनिषदों की नैतिक परंपराओं, और रामायण में वर्णित आदर्श जीवन-मूल्यों से निर्मित है। यह केवल एक राजनीतिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक ऐसे समग्र जीवन-दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें धर्म, कर्तव्य, न्याय, करुणा, मर्यादा, सत्य और समरसता जैसे मूल तत्व शामिल हैं। इन सिद्धांतों का आधार यह विश्वास है कि समाज तभी फलता-फूलता है जब व्यक्ति, परिवार, समुदाय और शासन—अपने-अपने कर्तव्यों को धर्मानुसार निभाते हैं। रामराज्य का दर्शन मनुष्य की बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार की उन्नति पर बल देता है, जिसमें नैतिकता और आध्यात्मिकता की केंद्रीय भूमिका होती है। रामराज्य के दार्शनिक आधार की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है धर्म की व्यापक और समावेशी व्याख्या। यहाँ धर्म किसी विशिष्ट संप्रदाय का नाम नहीं, बल्कि वह सार्वभौम नैतिक-संहिता है जो सत्य, अहिंसा, सदाचार, त्याग, कर्तव्य और न्याय पर आधारित है। यही कारण है कि रामराज्य में शासन-व्यवस्था शास्त्रीय सिद्धांतों और लोकहित को संतुलित करती है। श्रीराम स्वयं "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में प्रस्तुत हुए, जो यह दर्शाता है कि शासनकर्ता का सबसे बड़ा गुण उसका आत्मानुशासन, निष्पक्षता और लोकहित के प्रति समर्पण है। सांस्कृतिक दृष्टि से रामराज्य भारतीय जीवन-मूल्यों की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। भारत की सांस्कृतिक परंपरा—परस्पर सहयोग, परिवार-केन्द्रित जीवन, धर्मपालन, सेवा, दया, त्याग, सत्य, और प्रकृति के प्रति सम्मान—रामराज्य की मूल आत्मा है। समाज में सभी व्यक्तियों का सम्मान, स्त्री-पुरुष समानता, वृद्धों का आदर, और बच्चों की रक्षा जैसे मूल्य रामायणकालीन संस्कृति का मूलभूत हिस्सा रहे हैं। यही मूल्य आधुनिक संस्कृति को भी सभ्यता और संवेदनशीलता का आधार प्रदान करते हैं। रामराज्य के सांस्कृतिक आधार का एक और महत्वपूर्ण पहलू है सामूहिक कल्याण की भावना। यहाँ व्यक्ति की उन्नति तभी सार्थक मानी जाती है जब वह समाज की उन्नति के साथ जुड़ी हो। कल्याणकारी दृष्टिकोण, साझा कर्तव्य और सामाजिक सह-अस्तित्व रामराज्य के संस्कृति-तत्व हैं। समाज में न कोई भूखा रहता है, न दुखी, न शोषित—यह विचार भारतीय लोकसंस्कृति में सदियों से अभिप्रेत आदर्श है। रामराज्य का दर्शन यह भी सिखाता है कि शासक और नागरिक दोनों अपने-अपने कर्तव्यों को धर्मपूर्वक निभाएँ। राजा का काम केवल शासन करना नहीं, बल्कि लोकसेवा, न्याय और नैतिक आदर्शों का पालन करना है। नागरिकों का कार्य है अनुशासन, सत्य, परिश्रम और समरसता का पालन करना। यह कर्तव्य-आधारित संस्कृति रामराज्य को एक विशिष्ट मानवीय और आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करती है। रामराज्य का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक आधार एक ऐसे समाज की परिकल्पना करता है जहाँ शासन धर्म पर आधारित हो, संस्कृति मानवीय मूल्यों पर टिकी हो, और नागरिक नैतिकता एवं कर्तव्यनिष्ठा से प्रेरित हों। यह आदर्श आज भी विकसित एवं न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है।

विकसित भारत में रामराज्य की भूमिका

विकसित भारत में रामराज्य की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी है, क्योंकि रामराज्य केवल एक पौराणिक राज्य-व्यवस्था नहीं, बल्कि नैतिकता, न्याय, समानता और समग्र विकास का वह आदर्श मॉडल है जो आज के आधुनिक, प्रगतिशील और लोकतांत्रिक भारत के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। विकसित भारत का लक्ष्य केवल आर्थिक समृद्धि प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक संतुलित, न्यायपूर्ण, शांतिपूर्ण और नैतिक समाज का निर्माण करना है—ऐसा समाज जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान अवसर मिले, सुरक्षा

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

हो, सम्मान मिले और शासन में विश्वास बना रहे। रामराज्य इसी मानवीय एवं लोककल्याणकारी आदर्श का प्रतीक है।रामराज्य का मुख्य आधार धर्माधारित सुशासन है, जिसका अर्थ धार्मिक कट्टरता नहीं, बल्कि नैतिक सिद्धांतों और कर्तव्यनिष्ठा पर आधारित शासन-व्यवस्था है। विकसित भारत के निर्माण में यह सिद्धांत अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि आज का भारत भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन, पारदर्शी नीतियाँ, जनभागीदारी, और उत्तरदायी शासन जैसे मूल्यों को अपनाकर ही विश्व के अग्रणी राष्ट्रों में शामिल हो सकता है। रामराज्य यह संदेश देता है कि शासन तभी मजबूती पाता है जब नेतृत्व सेवाभाव, न्यायप्रियता, कर्तव्य, और त्याग को सर्वोपरि रखे।

सामाजिक समरसता और समानता भी रामराज्य की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। विकसित भारत का लक्ष्य भी एक ऐसे समाज का निर्माण है जिसमें जाति, वर्ग, धर्म या लिंग के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव न हो। रामराज्य में सभी वर्गों की सुरक्षा, सम्मान और उन्नति पर समान रूप से ध्यान दिया जाता था। आज भारत सामाजिक सामंजस्य, सामुदायिक सौहार्द और सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास जैसे सिद्धांतों के माध्यम से इसी आदर्श को साकार करने की दिशा में अग्रसर है।आर्थिक दृष्टि से रामराज्य संतुलित, समावेशी और सर्वजनहिताय विकास की प्रेरणा देता है। वहाँ समृद्धि का अर्थ केवल धन-संपत्ति का संचय नहीं था, बल्कि यह सुनिश्चित करना था कि कोई भी व्यक्ति भूखा, बेरोज़गार या असुरक्षित न रहे। आज विकसित भारत की आर्थिक नीतियाँ—ग्रामीण विकास, स्वरोज़गार, कृषि-सुधार, लघु उद्योग, डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसी योजनाएँ—रामराज्य के उस सिद्धांत का विस्तार हैं जिसमें हर नागरिक को आर्थिक उन्नति का अवसर मिलता है।

रामराज्य में न्याय की त्वरित और निष्पक्ष व्यवस्था थी। विकसित भारत का प्रमुख लक्ष्य भी यही है कि न्याय आम नागरिक तक आसानी से पहुँचे और न्याय-प्रक्रिया पारदर्शी हो। आधुनिक न्याय व्यवस्था में सुधार, ई-कोर्ट, कानूनी सहायता और पुलिस सुधार ऐसे प्रयास हैं जो रामराज्य के न्याय सिद्धांत को आधुनिक रूप देते हैं। पर्यावरण संरक्षण, नैतिक शिक्षा, सांस्कृतिक संवर्धन, महिलाओं की सुरक्षा, वृद्धों व बच्चों की सुरक्षा—ये सभी क्षेत्र रामराज्य के अभिन्न अंग थे, और आज विकसित भारत भी इन्हें अपनी प्राथमिकता में शामिल कर रहा है। रामराज्य विकसित भारत के लिए एक आदर्श, प्रेरणा और मार्गदर्शक सिद्धांत की तरह कार्य करता है। यह हमें बताता है कि केवल आर्थिक प्रगति ही पर्याप्त नहीं, बल्कि नैतिकता, न्याय, करुणा, समानता और मानवता के मूल्यों पर आधारित समाज ही वास्तविक रूप से विकसित कहलाता है। जब भारत इन मानवीय आदर्शों के साथ आगे बढ़ेगा, तभी सच्चे अर्थों में "विकसित भारत" के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

विकसित भारत में सुशासन और न्याय के क्षेत्र में रामराज्य की प्रासंगिकता

विकसित भारत के निर्माण की प्रक्रिया में सुशासन और न्याय की भूमिका अत्यंत केंद्रीय है, और इन दोनों क्षेत्रों में रामराज्य की अवधारणा आज भी प्रेरक एवं मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में महत्वपूर्ण बनी हुई है। रामराज्य में शासन का मूलाधार सत्य, धर्म, पारदर्शिता और जनकल्याण था, जहाँ राजा स्वयं को प्रजा का सेवक मानकर निर्णय लेता था। यह अवधारणा आधुनिक लोकतांत्रिक शासन में उत्तरदायित्व और लोक-सेवा की भावना से पूर्णतः मेल खाती है। विकसित भारत में सुशासन का अर्थ है—भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन, कुशल नीति-निर्माण, पारदर्शी व्यवस्था, नागरिकों की समान उपलब्धता, और समयबद्ध न्याय—ये सभी तत्व रामराज्य की परिकल्पना में गहराई से निहित हैं। रामराज्य की न्याय-व्यवस्था समतामूलक और सर्वहितकारी थी, जहाँ किसी भी वर्ग, जाति, लिंग या आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं था। आधुनिक भारत में न्यायालयों में लंबित मामलों की अधिकता, कमजोर वर्गों के लिए न्याय प्राप्ति की कठिनाइयाँ, तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलता जैसे मुद्दों को देखते हुए रामराज्य का यह आदर्श विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठता है। न्याय केवल अदालतों तक सीमित न होकर शासन और समाज के हर स्तर पर लागू होना चाहिए—यह रामराज्य की मूल भावना है। विकसित भारत को सशक्त बनाने के लिए न्याय तक त्वरित पहुंच, डिजिटल न्याय-प्रणाली, पुलिस एवं प्रशासन में पारदर्शिता, और सामाजिक न्याय जैसे सुधारों की आवश्यकता है, जिनका आधार वैसा ही होना चाहिए जैसा रामराज्य में था—निष्पक्ष, लोक-हितकारी और सार्वभौमिक। इसके अतिरिक्त, सुशासन का एक महत्वपूर्ण घटक नैतिक नेतृत्व भी है। रामराज्य में नेतृत्व नैतिकता पर आधारित था, जहाँ राजा की व्यक्तिगत इच्छाएँ नहीं, बल्कि जनकल्याण सर्वोपरि रहता था। आधुनिक भारत में राजनीतिक और प्रशासनिक नेतृत्व में सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता, ईमानदारी और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना विकसित भारत की नींव मजबूत करती है। रामराज्य का यह संदेश कि "शासन शक्ति का नहीं, सेवा का माध्यम है" आज की लोकतांत्रिक प्रणाली में भी उतना ही आवश्यक है।आज जब भारत डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है और शासन तेजी से आधुनिक व तकनीक-आधारित हो रहा है, तब भी रामराज्य का मूल सिद्धांत—प्रजा के कल्याण के लिए सरल, सुगम और संवेदनशील शासन—अत्यंत प्रासंगिक है। ई-गवर्नेंस, डिजिटल इंडिया, पारदर्शी नीति-निर्माण, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, और भ्रष्टाचार-निरोधक उपाय इन सबकी बुनियाद रामराज्य जैसे सुशासन के आदर्शों में ही निहित है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

विकसित भारत में लोककल्याण और जनभागीदारी : रामराज्य का प्रेरणास्रोत

विकसित भारत के निर्माण में लोककल्याण और जनभागीदारी दो ऐसे स्तंभ हैं, जिन पर समग्र विकास की अवधारणा टिकती है, और इन दोनों के लिए रामराज्य एक उच्च आदर्श तथा प्रेरक स्रोत के रूप में उभरता है। रामराज्य में शासन की आधारशिला ही लोककल्याण पर आधारित थी—जहाँ शासक और प्रशासन का प्रत्येक निर्णय जनता की सुख-शांति, सुरक्षा और उन्नति को ध्यान में रखकर लिया जाता था। रामराज्य की परिकल्पना बताती है कि एक विकसित राष्ट्र केवल आर्थिक समृद्धि से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की आवश्यकताओं, अधिकारों और सुविधाओं को समान रूप से उपलब्ध कराने से बनता है। आधुनिक भारत में जब "विकसित भारत" की दृष्टि प्रस्तुत की जाती है, तो उसका मूल भी यही है कि विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, जो "अंत्योदय" के विचार से मेल खाता है। यह नीति-निरूपण, संसाधनों के वितरण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के निर्माण में रामराज्य की लोककल्याणकारी भावना को अत्यंत प्रासंगिक बनाती है। जनभागीदारी रामराज्य का एक महत्वपूर्ण आयाम था, जहाँ नागरिकों की आवाज़ शासन का आधार मानी जाती थी। आधुनिक लोकतांत्रिक भारत में भी जनता की सक्रिय भागीदारी विकास प्रक्रिया को न केवल पारदर्शी और प्रभावी बनाती है, बल्कि नीतियों को जमीनी स्तर से जोड़ने में सहायता करती है। आज विकसित भारत का निर्माण तभी संभव है, जब नागरिक नीति-निर्माण, सामाजिक सुधार, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ग्रामसभा, नगरीय निकायों और जन आंदोलन जैसे विभिन्न माध्यमों से सक्रिय रूप से योगदान दें। रामराज्य का संदेश है कि शासन केवल सरकार का कार्य नहीं, बल्कि एक समन्वित प्रक्रिया है, जिसमें जनता और शासन प्रणाली दोनों समान रूप से उत्तरदायी होते हैं। यही विचार "जनभागीदारी से जनकल्याण" की आधुनिक अवधारणा को मजबूत आधार प्रदान करता है। लोककल्याण की दृष्टि से रामराज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, न्याय, रोजगार और सामाजिक सम्मान जैसे मूल अधिकारों की सुनिश्चितता प्राथमिक थी। आज का विकसित भारत भी इन्हीं मानकों पर आगे बढ़ रहा है—जहाँ डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएँ, कौशल विकास, सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ, गरीब कल्याण कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण-शहरी संतुलित विकास जैसे कदम लोककल्याण की भावना को आगे बढ़ाते हैं। इन नीतियों में रामराज्य के उस आदर्श का प्रतिबिंब मिलता है, जिसमें शासन का उद्देश्य किसी वर्ग विशेष का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज के उत्थान का होता है। इसके साथ ही रामराज्य हमें यह भी सिखाता है कि जनभागीदारी केवल मतदान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि नागरिकों को जागरूक, उत्तरदायी और सहयोगी बनकर सामाजिक और राष्ट्रीय विकास में निरंतर भूमिका निभानी चाहिए। आधुनिक भारत में सामुदायिक सहभागिता, स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका, डिजिटल जनसंपर्क, सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जागरूकता और स्थानीय समस्याओं के समाधान में जनता का सीधा हस्तक्षेप उसी जनसशक्ति को दर्शाता है, जिस पर रामराज्य आधारित था।

आधुनिक प्रशासन में रामराज्य के सिद्धांतों की उपयोगिता

आधुनिक प्रशासन में रामराज्य के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी, प्रासंगिक और मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं, क्योंकि वे शासन को केवल शक्ति का साधन नहीं, बल्कि लोकसेवा का माध्यम मानते हैं। रामराज्य का मुख्य आधार सत्य, न्याय, कर्तव्य और करुणा है, जो किसी भी आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ और जनहितकारी बनाने के लिए आवश्यक तत्व हैं। आज जब प्रशासनिक तंत्र तकनीकी रूप से उन्नत होकर डिजिटल शासन, ई-गवर्नेंस और पारदर्शिता की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब भी रामराज्य की मूल प्रेरणा—नैतिकता, उत्तरदायित्व, सेवा-भाव और निष्पक्षता—अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहती है। आधुनिक प्रशासन का उद्देश्य समयबद्ध, पारदर्शी, भ्रष्टाचार-मुक्त और जन-केंद्रित व्यवस्था स्थापित करना है, और इसमें रामराज्य के सुशासन के आदर्श सीधे लागू होते हैं। उदाहरण के रूप में, रामराज्य में राजा का आचरण आदर्श नैतिकता का प्रतीक था; आज यही विचार प्रशासनिक अधिकारियों के *आचार संहिता, नैतिक नेतृत्व,* और *सार्वजनिक जवाबदेही* के रूप में सामने आता है।रामराज्य में न्याय सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध था—न किसी पर अत्याचार, न पक्षपात, और न ही वर्ग-आधारित भेदभाव। आधुनिक प्रशासन में न्यायपालिका सुधार, पारदर्शी जांच प्रणाली, नागरिक-अधिकारों की रक्षा, और त्वरित न्याय की आवश्यकता उसी भावना का विस्तार है। इसके अतिरिक्त, रामराज्य का सिद्धांत था कि शासन जनता की आवश्यकता, सुरक्षा और कल्याण को प्राथमिकता दे। आज यह विचार वेलफेयर स्टेट, सार्वजनिक सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, स्वास्थ्य-शिक्षा की उपलब्धता, तथा नागरिक-केंद्रित नीतियों के रूप में दिखाई देता है। प्रशासन का उद्देश यही है कि हर नागरिक को बिना भेदभाव के सुविधाएँ और अवसर मिलें—यह रामराज्य के मूल भाव का आधुनिक रूप है।रामराज्य में जनसंवाद और जनता की सहभागिता को भी विशेष महत्व दिया गया था। आधुनिक प्रशासन में यह "सहभागी शासन", "जन संवाद", "डिजिटल फीडबैक सिस्टम", "सामाजिक लेखा परीक्षा" और "ग्रामसभा-निकायों की भूमिका" के रूप में साकार होता है। जब नागरिक शासन की नीतियों में भाग लेते हैं, तो प्रशासन अधिक उत्तरदायी, प्रभावी और जनहितकारी बनता है—यही रामराज्य का सिद्धांत था। इसके साथ ही, रामराज्य में पर्यावरणीय संतुलन,

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

अहिंसा, सामाजिक सद्भाव और सामूहिक कल्याण जैसे तत्व प्रशासन की दिशा तय करते थे। आज यह सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण नियमों, जल-संसाधन प्रबंधन, और सामाजिक सुरक्षा कानूनों के रूप में लागू होते हैं।

मानवीय मूल्य, सेवा और करुणा : विकसित भारत की आधारशिला

विकसित भारत की परिकल्पना केवल आर्थिक, तकनीकी और अवसंरचनात्मक प्रगति पर आधारित नहीं है, बल्कि उसके केंद्र में मानवीय मूल्य, सेवा और करुणा जैसे मूलभूत नैतिक तत्व निहित हैं। किसी भी राष्ट्र का वास्तविक विकास तभी संभव होता है जब वह अपने नागरिकों की भावनात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को समझते हुए मानव-केन्द्रित नीतियाँ अपनाए। मानवीय मूल्य वह नैतिक आधार हैं, जिनसे समाज में विश्वास, सद्भाव, समानता और सम्मान की भावना स्थापित होती है। सेवा का अर्थ है निस्वार्थ भाव से समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व निभाना, जबकि करुणा वह संवेदनशीलता है, जो कमजोर, वंचित और जरूरतमंद वर्गों के प्रति दया, सहानुभूति और सहयोग की भावना जागृत करती है। ये तीनों तत्व विकसित भारत की नैतिक और सामाजिक संरचना को संतुलन, स्थिरता और समझदारी प्रदान करते हैं।मानवीय मूल्यों के बिना विकास एकतरफा और असंतुलित हो सकता है। आज के समय में जब भारत डिजिटल, विज्ञान-प्रणीत और वैश्विक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, तब सामाजिक संबंधों में विश्वास, नागरिकों में परस्पर सम्मान, और व्यवस्था में नैतिकता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। मानवाधिकारों की रक्षा, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, विविधता का सम्मान, और सामुदायिक सद्भाव—ये सभी मानवीय मूल्य विकसित भारत की आत्मा हैं। ये न केवल समाज को स्थिर रखते हैं, बल्कि नागरिकों में नैतिक जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी का बोध भी उत्पन्न करते हैं।सेवा की भावना विकसित भारत के लिए अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि सेवा ही समाज में सहयोग, त्याग और उत्तरदायित्व की चेतना को जीवित रखती है। जब नागरिक, पंचायतें, स्वैच्छिक संगठन, प्रशासन और नेतृत्व सेवा-भाव अपनाते हैं, तो समाज में सकारात्मक वातावरण बनता है। सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर लोककल्याणकारी योजनाएँ, परोपकारी कार्य, सामुदायिक सहयोग, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में सेवा-आधारित दृष्टिकोण जनता का विश्वास बढ़ाता है और विकास के लाभों को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने में सहायक होता है। सेवा पर आधारित शासन व्यवस्था अधिक संवेदनशील, उत्तरदायी और पारदर्शी बनती है, जो विकसित राष्ट्र की पहचान है।करुणा मानवता की वह शक्ति है, जो समाज को संवेदनशील और सहायक बनाती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सामाजिक असमानताएँ, गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य की चुनौतियाँ इस बात की मांग करती हैं कि नागरिक और शासन करुणापूर्वक निर्णय लें। करुणा का अर्थ केवल दया नहीं, बल्कि सक्रिय रूप से कमजोर वर्गों के पुनर्वास, अवसर-सृजन और सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने के प्रयासों से है। जब नीतियाँ करुणा के आधार पर बनाई जाती हैं, तब समाज अधिक समतामूलक और न्यायपूर्ण बनता है। महिलाओं, बच्चों, दिव्यांगों, बुजुर्गों, ग्रामीण समुदायों और अल्पसंख्यक समूहों के प्रति संवेदनशील नीतियाँ करुणा की भावना से ही संचालित होती हैं, और यही विकसित भारत का सामाजिक आधार मजबूत करती हैं।

रामराज्य का भारतीय समाज

रामराज्य हिंदू पौराणिक कथाओं और भारतीय दर्शन से लिया गया एक शब्द है। यह धार्मिकता, न्याय और नैतिक शासन के सिद्धांतों पर आधारित समाज की एक आदर्श और सामंजस्यपूर्ण स्थिति को संदर्भित करता है। रामराज्य की अवधारणा हमारे श्रद्धेय भगवान श्रीराम से जुड़ी हुई है जोकि हिंदू धर्म के और प्राचीन भारतीय महाकाव्य, रामायण के नायक है। रामायण में, भगवान राम को एक आदर्श शासक के रूप में दर्शाया गया है जो धर्म का प्रतीक है और एक न्यायपूर्ण और परोपकारी शासन का नेतृत्व करता है। उनके शासन को अक्सर आदर्श समाज का प्रतीक माना जाता है जहां लोगों का कल्याण, उनकी खुशी और समृद्धि सर्वोपरि है। वर्तमान भारत में विभिन्न नेताओं और राजनीतिक हस्तियों द्वारा एक आदर्श समाज और शासन के अपने दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए रामराज्य के विचार का आह्वान किया जाता रहा है। चूंकि रामराज्य भ्रष्टाचार, असमानता और अन्याय से मुक्त और नैतिकता और नैतिक सिद्धांतों द्वारा शासित समाज का प्रतीक है।भारतीय समाज में, रामराज्य का प्रभाव न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में, बल्कि राजनीतिक वक्तव्यो और सार्वजनिक प्रवचनों में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहाँ तक कि रामराज्य की अवधारणा में पाए जाने वाले न्याय, नैतिकता और नैतिक आचरण के सिद्धांत भारतीय समाज के नैतिक ढांचे को आकार देने में महत्वपूर्ण मार्गदर्शक कारक बने हुए हैं। हालांकि, यह पहचानना आवश्यक है कि रामराज्य की व्याख्या विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के बीच भिन्न-भिन्न हो सकती है। किसी भी ऐतिहासिक, धार्मिक या दार्शनिक अवधारणा की तरह, रामराज्य के अनुप्रयोग पर भी अलग-अलग लोगों के अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं जोकि अक्सर बहस और चर्चा का विषय बने रहते है। यह कुछ लोगों के लिए प्रेरणा और आकांक्षा का विषय बना हुआ है, जबकि अन्य लोग इसके ऐतिहासिक संदर्भ और आज के जटिल और विविध समाज में व्यावहारिक प्रयोज्यता को देखते हुए इसे अत्याधिक आलोचनात्मक नजरिए से देखते हैं। कुछ आलोचकों का तर्क है कि आधुनिक भारतीय समाज में समाज और शासन की जटिलताओं को

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

देखते हुए. इस अवधारणा में कुछ परिवर्तन करके इसे आदर्श बनाया जा सकता है क्योकि व्यावहारिक रूप से इसे पूर्णत्या लागू नहीं किया जा सकता।

रामराज्य और भारतीय संविधान की मूल संरचना

हमारे संविधान के धार्मिक दृष्टिकोण का मूल संविधान में उपयोग किए गए दृष्टांतों से गहरा संबंध है या नहीं। संविधान के भाग-3 जिसमें मौलिक अधिकार अध्याय शामिल है, में श्री राम, श्री लक्ष्मण और माता सीता के चित्रण है। इतिहास इस बात का गवाह है कि भारतीय संविधान को संविधान निर्माताओं, संविधान सभा ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया था फिर इन चित्रों का उपयोग करने के पीछे का विचार भारत की प्राचीन विरासत, संस्कृति, रीति-रिवाज, जीवन और आधुनिक काल तक भारत की भावना को चित्रित करना था या कुछ ओर। डॉ० अंबेडकर जैसे महान व्यक्तित्व ने व्यक्तिगत रूप से डॉ० राजेंद्र प्रसाद को सचित्र संविधान भेंट किया था तथा संविधान सभा के एक भी सदस्य का उल्लेख नहीं है जिसने इस विचार का विरोध किया हो। भारत का संविधान कला का एक आकर्षक नमूना है जिसका पहला भाग सिंधु घाटी के लोकप्रिय सील-चिह्न, बैल से शुरू होता है। नागरिकता का भाग भारत के वैदिक युग द्वारा दर्शाया गया है। यह वह समय था जब लोकप्रिय महाकाव्य रामायण और महाभारत का उदय हुआ। राज्य नीति के अध्याय की शुरुआत कुरुक्षेत्र युद्ध से पहले अर्जुन और कृष्ण के वार्तालाप एवं गीता के उपदेष के प्रतिष्ठित दृश्य से होती है। गुप्त काल को भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। शानदार बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास का संयोजन महान कला और साहित्य की विशेषता थी। अजंता की पेंटिंग, कालिदास के ग्रंथ, आर्यभट्ट की गणितीय प्रतिभा, ये सभी गुप्त काल का हिस्सा थे। मूल संविधान पर चित्र केवल रोशनी या सजावट के उद्देश्य से थे परन्तु वस्तुस्थिति का गहन अध्ययन करने पर यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता। ये दुर्लभ चित्र केवल एक अलंकरण नहीं है, बल्कि भारतवर्ष के जनमानस में रची-बसी उनकी अन्तरआत्मा की पुकार है जिसके साथ वे जीते और मरते है। भले ही ये चित्र वास्तव में सविधान के किसी भी लिखित अनुच्छेद का हिस्सा नहीं है और ना ही रामराज्य, हमारे संविधान की मूल संरचना का एक हिस्सा है तो भी इस संबंध में आम नागरिकों के मन में शेष किसी भी संदेह को दूर करना शासन का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

निष्कर्ष

विकसित भारत के निर्माण में रामराज्य की उपादेयता बहुआयामी और दूरगामी है। यह न केवल प्रशासन और शासन की आदर्श प्रणाली को दर्शाता है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी विकास की संतुलित दिशा प्रदान करता है। आज के भारत में यदि हम पारदर्शिता, न्याय, समावेशी विकास, नैतिक नेतृत्व, सामाजिक सद्भाव, लोककल्याण और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दें, तो हम रामराज्य की अवधारणा के मूल सिद्धांतों को आधुनिक रूप में अपनाते हुए विकसित भारत की मजबूत नींव रख सकते हैं। विकसित भारत की यात्रा में रामराज्य एक अतीत का आदर्श न होकर भविष्य का मार्गदर्शन करने वाली एक सशक्त और प्रासंगिक अवधारणा बनकर उभरता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राकेश शर्मा, (2018). रामराज्य और आधुनिक भारत का विकास मॉडल. *भारतीय प्रशासन समीक्षा*, 12(3), 45–56.
2. सीमा त्रिपाठी, (2020). सुशासन के आदर्श और रामराज्य की अवधारणा. *शासन शोध पत्रिका*, 8(2), 112–124.
3. देवेंद्र कुमार मिश्रा, (2017). भारतीय लोकतंत्र में रामराज्य की प्रासंगिकता. *राष्ट्रीय नीतिशास्त्र जर्नल*, 5(1), 78–90.
4. अनिल जोशी, (2019). रामराज्य के सांस्कृतिक आयाम और विकसित भारत. *भारतीय संस्कृति एवं समाज*, 14(4), 33–47.
5. कुसुमलता सिंह, (2021). सुशासन के सिद्धांत और रामायण का परिप्रेक्ष्य. *लोक नीति विश्लेषण*, 9(1), 101–114.
6. अमित वर्मा, (2016). रामराज्य: नैतिक नेतृत्व और प्रशासन. *भारतीय प्रबंधन समीक्षा*, 7(3), 56–70.
7. राधाकृष्ण गुप्ता, (2022). विकासशील भारत और रामराज्य की उपादेयता. *आधुनिकीकरण पत्रिका*, 11(2), 89–103.
8. ममता चौधरी, (2015). रामराज्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. *सामाजिक अध्ययन जर्नल*, 6(4), 140–152.
9. लोकेश तिवारी, (2020). रामराज्य और सामाजिक समरसता: आधुनिक दृष्टि. *भारतीय समाज विज्ञान समीक्षा*, 10(3), 67–79.
10. मनीष अग्रवाल, (2018). सुशासन मॉडल के रूप में रामराज्य की उपयोगिता. *लोक प्रशासन वार्षिकी*, 13(1), 22–35.
11. भावना पांडेय, (2021). 21वीं सदी में रामराज्य की अवधारणा की प्रासंगिकता. *साहित्य एवं समाज*, 15(2), 94–108.
12. रोहन शुक्ला, (2019). रामराज्य और सतत विकास: तुलनात्मक अध्ययन. *सतत विकास शोध पत्रिका*, 9(4), 58–72.
13. विशाल देसाई, (2017). भारतीय शासन प्रणाली में रामराज्य का दार्शनिक आधार. *भारतीय चिंतन जर्नल*, 4(2), 120–133.
14. अर्चना राजपूत, (2022). विकसित भारत के संदर्भ में रामराज्य का पुनर्पाठ. *आधुनिक भारत अध्ययन*, 12(1), 49–64.
15. मोहन कश्यप,(2016).रामराज्य:सामाजिक न्याय और कल्याणकारी राज्य की अवधारणा. *भारतीय नीतिगत समीक्षा*, 3(3),75–88.